वली डाड के उपहार

वली डाड के उपहार

एक समय की बात है कि नगर से दूर एक छोटी सी कुटिया में वली डाड रहता था. वह घास काटने का काम करता था.

हर सुबह वह ऊँची, जंगली घास काट कर उसके गट्ठे बना लेता था. दुपहर बाद उस घास को वह बाज़ार में बेच देता था.

हर दिन वह तीस पैसे कमाता था. दस पैसे वह अपने खाने पर खर्च करता था. दस पैसों से वह अपनी अन्य ज़रूरतें पूरी करता था. और दस पैसे बचा कर बिस्तर के नीचे रखे मटके में डाल देता था.

इस तरह वली ने अपने जीवन के कई वर्ष बड़ी प्रसन्नता से बिताये.

यह देखने के लिए कि कितने पैसे जमा हो गए थे, एक शाम वली डाड ने बिस्तर के नीचे से मटका खींच कर बाहर निकाला. उसे देख कर आश्चर्य हुआ कि मटका पूरा भरा हुआ था.

"इन सब पैसों का मैं क्या करूँगा?" उसने अपने आप से कहा. "जो कुछ मेरे पास है उससे अधिक मुझे कछ नहीं चाहिए."

वली ने सोचा और बहुत सोचा. आखिरकार उसके मन में एक विचार आया.

अगले दिन वली ने सारे पैसे एक थैले में रख लिए और थैले को उठा कर बाज़ार में एक जौहरी के पास आया. उन पैसों से उसने सोने का एक सुंदर कंगन खरीद लिया.

फिर वली एक सौदागर के घर आया.

"मुझे बताओ," वली ने पूछा, "सारे संसार में सबसे नेक औरत कौन है?"

"निस्संदेह," सौदागर ने कहा, "खिस्तान की सुंदर रानी सबसे नेक है. मैं प्राय: उसके महल में जाता हूँ. वहाँ जाने कि लिए पूर्व की ओर तीन दिन यात्रा करनी पड़ती है."

"मुझ पर एक कृपा करना," वली बोला. "अगली बार जब तुम उधर जाओगे तो मेरी शुभकामनाओं के साथ यह कंगन से उसे दे देना."

सौदागर को बहुत आश्चर्य हुआ, लेकिन उसने फटीचर घास काटने वाले की बात मान ली.

शीघ्र ही सौदागर ने अपने को खिस्तान की रानी के महल में पाया. वली की ओर से उपहार के रूप में सोने का कंगन उसने रानी को भेंट में दिया.

"कितना सुंदर है!" कंगन की प्रशंसा करते हुए वह बोली. "तुम्हारे मित्र को इसके बदले में मेरा एक उपहार स्वीकार करना पड़ेगा. मेरा सेवक ऊँट पर सबसे उत्तम रेशम लाद कर उसके लिए देगा."

जब सौदागर घर वापस आया तो वह रेशम लेकर वली के पास आया.

"अरे नहीं!" घास काटने वाले ने कहा. "यह तो पहले से भी बुरी बात है. मैं इस सुंदर रेशम का क्या करूँगा?"

"शायद तुम इसे किसी को दे सकते हो," सौदागर ने सुझाव दिया.

वली ने कुछ देर सोचा. “मुझे बताओ इस दुनिया में सबसे नेक आदमी कौन है?” उसने पूछा.

“यह बताना तो सरल है,” सौदागर बोला. “नेकाबाद का युवा राजा है. उसके महल में भी मुझे कई बार जाना पड़ता है. उसका महल पश्चिम की ओर बस तीन दिन दूरी पर है.”

“फिर मेरे ऊपर एक मेहरबानी करो,” वली ने निवेदन किया. अगली यात्रा के समय मेरी शुभकामनाओं के साथ यह रेशम उसे दे देना.”

सौदागर को हँसी आई पर वह राज़ी हो गया. अगली यात्रा के समय उसने वह रेशम नेकाबाद के राजा को उपहार में दिया.

“उत्कृष्ट उपहार है,” राजा ने कारीगरी की प्रशंसा करते हुए कहा. “इसके बदले में तुम्हारे मित्र को मेरे सबसे उत्तम बारह घोड़े स्वीकार करने होंगे.”

तो सौदागर राजा के बारह घोड़े वली के पास ले आया.

“यह तो पहले से भी बुरा हो रहा है,” वृद्ध ने कहा. “बारह घोड़ों को लेकर मैं क्या करूँगा?”

फिर एक पल के बाद वली ने कहा, “मैं जानता हूँ कि यह उपहार किस को मिलना चाहिए. मेरा निवेदन है कि दो घोड़े तुम रख लो और बाकी घोड़े खिस्तान की रानी के पास ले जाओ!”

सौदागर को लगा कि यह सब बहुत हास्यजनक था, लेकिन उसने वृद्ध की बात मान ली. जब अगली बार वह रानी के महल में गया तो घोड़े उसे दे दिये.

अब रानी उलझन में पड़ गई. उसने अपने मुख्य मंत्री के कान में फुसफुसा कर कहा, "यह वली डाड बार-बार उपहार क्यों भेज रहा है? मैंने तो उसका नाम भी नहीं सुना!"

मुख्य मंत्री ने कहा, "आप उसे निरुत्साहित क्यों नहीं करतीं? उसे इतना मूल्यवान उपहार भिजवायें कि वह उसकी बराबरी करने की बात सोच भी न पाये."

इसलिए उसके दस घोड़ों के बदले में रानी ने बीस खच्चरों पर चाँदी लाद कर वली के पास भिजवाई.

जब सौदागर बीस खच्चरों के साथ उसकी कुटिया आया तो वली चिल्लाया. "मैंने ऐसा क्या किया है कि यह मुसीबत आ पड़ी है? मित्र, एक वृद्ध पर दया करो! दो खच्चर और उन पर लदी चाँदी तुम रख लो और बाकी सब नेकाबाद के राजा के पास ले जाओ!"

सौदागर व्याकुल हो रहा था. लेकिन वह इस उदार प्रस्ताव के ठुकरा न सकता था. इसलिए, कुछ समय बाद चाँदी से लदी खच्चरों को लेकर वह नेकाबाद के राजा के सामने उपस्थित हुआ.

राजा भी उलझन में पड़ गया. उसने अपने मुख्य मंत्री से सलाह ली.

"शायद वली डाड जतलाना चाहता है कि वह आप से श्रेष्ठ है," मुख्य मंत्री ने कहा. "आप उसके पास ऐसा उपहार भिजवायें जिससे बढ़कर वह कोई उपहार दे न पाये."

यही सोच कर राजा ने बीस ऊँट और बीस घोड़े, जिन पर सोने की लगामे और रकाबें लगी थीं, बीस हाथी जिन पर सोने के हौदे रखे थे, और उनकी देखभाल करने के लिए बीस वर्दीधारी सेवक वली के पास भिजवाये.

जब सेवकों और जानवरों को साथ लेकर सौदागर वृद्ध वली की कुटिया पहुँचा तो वह आपे से बाहर हो गया. “क्या मेरे दुर्भाग्य का कभी अंत न होगा? कृपया, एक मिनट भी न रुको! इन में से दो-दो पशु अपने लिए रख लो और बाकी सब खिस्तान की रानी के पास ले जाओ!”

“मैं उसके पास दुबारा कैसे जा सकता हूँ?” सौदागर ने विरोध किया. लेकिन वली ने इतनी अनुनय की कि सौदागर ने अंतिम बार रानी के पास जाने की बात मान ही ली.

इस बार वली के उपहारों की भव्यता देखकर रानी दंग हो गई. उसने फिर से अपने मुख्य मंत्री से बात की.

“स्पष्ट है,” मुख्य मंत्री ने कहा, “कि वह आपसे विवाह करना चाहता है. उसके उपहार इतने उत्कृष्ट हैं कि शायद आपको उससे मिलना चाहिए.”

रानी ने आदेश दिया कि असंख्य घोड़ों, ऊँटों और हाथियों का एक विशाल काफिला बनाया जाये. मार्ग दिखलाने के लिए सौदागर को साथ लेकर, रानी और उसका दरबार महान वली से मिलने चल दिये.

तीसरे दिन इस काफिले ने एक स्थान पर पड़ाव डाला. अपने आने की सूचना देने के लिए रानी ने सौदागर को वली के पास भेज दिया.

जब सौदागर ने वली को यह समाचार सुनाया तो उसका मुँह लटक गया. “ओह, नहीं!” वह दुःखी भाव से बोला. “अब अपनी मूर्खता की सज़ा मुझे मिलेगी. मैंने अपने को, तुम्हें और रानी को लज्जित किया है. हम क्या करें?”

“मुझे संदेह है कि हम कुछ नहीं कर सकते!” सौदागर ने कहा और वापस रानी के पड़ाव की ओर चल दिया.

अगले दिन, भोर होने से पहले ही वली जाग गया. "अलविदा मेरी पुरानी कुटिया," उसने कहा. "मैं दुबारा यहाँ नहीं आऊँगा."

वृद्ध घास काटने वाला घर से चल दिया. लेकिन वह ज़्यादा दूर न गया था कि उसे एक आवाज़ सुनाई दी.

"तुम कहाँ जा रहे हो, वली डाड?"

वह घूमा और उसने दो अति सुंदर औरतें देखीं. वह तुरंत समझ गया कि वह जन्नत की परियाँ थीं.

वली घुटनों के बल बैठ गया और रोने लगा, "मैं एक मूर्ख वृद्ध हूँ. मुझे जाने दो. मैं अपनी शर्मिंदगी सहन नहीं कर सकता."

"तुम जैसे आदमी को कोई शर्मिंदा नहीं कर सकता," एक परी ने कहा. "तुम्हारे कपड़े चाहे फट्टे-पुराने हैं पर मन से तुम एक राजा हो."

परी ने उसके कंधे को छुआ. उसने विस्मय से देखा कि उसके पुराने कपड़े सुंदर वस्त्रों में बदल गए थे. उसके सिर पर रत्नों से सुसज्जित पगड़ी थी. उसकी ज़ंग लगी दराँती एक शानदार बेंत बन गई थी.

“लौट जाओ, वली,” दूसरी परी ने कहा. “सब वैसा ही है जैसा होना चाहिए.”

वली ने पीछे घूम कर देखा. जिस जगह उसकी कुटिया थी वहाँ उगते सूरज के प्रकाश में एक विशाल महल दिखाई दे रहा था. चकित होकर वह परियों की ओर घूमा, पर वह गायब हो गई थीं.

वली वापस चल पड़ा. जैसे ही वह अपने महल के अंदर आया, रक्षकों ने उसका अभिवादन किया. सेवक झुक कर प्रणाम करने लगे और फिर मेहमानों का स्वागत करने के लिए तैयारी करने लगे.

वली अनगिनत कमरों में घूमने लगा. महल का ऐश्वर्य उसकी कल्पना से परे था. अचानक तीन सेवक दौड़े आए.

“पूर्व से एक काफिला आ रहा है!” एक सेवक ने कहा.

“नहीं,” दूसरी बोला, “पश्चिम से एक काफिला आ रहा है.”

“नहीं,” तीसरे ने कहा, “पूर्व और पश्चिम, दोनों ओर से काफिले आ रहे हैं.”

वली घबराया हुआ बाहर भागा. उसके महल के सामने दो काफिले रुके हुए थे. पूर्व से रत्नों से सुसज्जित पालकी में रानी आई थी. पश्चिम से एक आलीशान घोड़े पर राजा आया था.

वली झटपट रानी के पास आया.

"प्रिय वली, आखिरकार हमारी भेंट हो ही गई," खिस्तान की रानी ने कहा. "लेकिन उधर वह प्रतापी राजा कौन है?"

"मुझे लगता है कि वह नेकाबाद का राजा है, रानी साहिबा," वली ने कहा. "कृपया मुझे कुछ देर के लिए क्षमा करें."

वह राजा की ओर भागा.

"प्रिय वली, इतने बढ़िया उपहार भेजने वाले आदमी से मुझे मिलना ही था," नेकाबाद के राजा ने कहा. "लेकिन उधर वह वैभवशाली रानी कौन है?"

"वह खिस्तान की रानी है, महाराज," वली ने मुस्कराते हुए कहा. "कृपया आकर उन से भेंट करें."

और इस तरह नेकाबाद का राजा खिस्तान की रानी से मिला और उसी क्षण दोनों में प्यार हो गया. कुछ दिनों के बाद वली के महल में उनका विवाह हुआ और समारोह कई दिनों तक चला.

आखिरकार वली ने अपने सब मेहमानों को अलविदा किया. अगली सुबह भोर होने से पहले ही वह उठ गया, चुपचाप वह अपने महल से बाहर आया और रास्ते पर चल पड़ा.

लेकिन वह ज़्यादा दूर न गया था कि उसने एक आवाज़ सुनी.

“तुम कहाँ जा रहे हो, वली डाड?”

वह घूमा और उसे दो परियाँ दिखाई दीं. वह फिर से घुटनों के बल बैठ गया.

“क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं एक मूर्ख वृद्ध हूँ? जो कुछ मुझे मिला है वह सब पाकर मुझे प्रसन्न होना चाहिए, लेकिन......”

“कुछ मत कहो,” दूसरी परी ने कहा. “तुम्हारे मन की इच्छा अवश्य पूरी होगी.” और उसने दुबारा वली के कंधे को छुआ.

तो वली फिर से घास काटने वाला बन गया, और जीवन के शेष दिन उसने बड़ी प्रसन्नता से अपनी छोटी सी कुटिया में बिताये. और यद्यपि अपने मित्रों, राजा और रानी, का वह प्यार से स्मरण करता था, लेकिन उसने फिर कभी कोई उपहार उन्हें नहीं भिजवाया.

समाप्त